अच्छी फिल्मों के लिए... बेहतरीन जगह...!

इजिप्ट में फिल्मों की बहार आने वाली है। यहां के अल-गौना में शुक्रवार से नया फिल्म फेस्टिवल शुरू हो गया है, जहां मध्य पूर्व और अफ्रीकी देशों की फिल्में ही नहीं, भारत की कहानियों पर बनीं दो फिल्में भी दिखाई जाएंगी। दुबई में दो फिल्म फेस्टिवल शुरू हुए हैं। एक चौदह साल से हो रहा है तो दूसरा काहिरा में होगा जो दिसम्बर में है।

दुबई का फिल्म फेस्टिवल लंबे समय बाद फिल्मों के लिए शानदार कैनवास देने में सफल रहा है। मध्य पूर्व और अफ्रीका की फिल्में यहां दिखाई जा रही हैं। एशियाई फिल्में भी यहां मौजूदगी दिखा रही हैं। थोड़ा-बहुत हॉलीवुड की भी फिल्में यहां हैं, जो ऑस्कर का रास्ता बनाती हैं। काहिरा की कुछ मुश्किलें भी हैं, जो दुबई के सिरे से मिलने को तैयार नहीं हैं। काफी हद तक सुस्ती है, क्योंकि यहां बेहतर फिल्मों के बीच होड़ नहीं है। ऐसा नहीं है कि दुबई ने एकाधिकार जमा लिया, नहीं तो यहां आने वाली फिल्में मुझे चौंकाती नहीं हैं। इस सबके बीच पहली बार हो रहा अल-गौना फिल्म फेस्टिवल भी पहचान बनाने को तैयार है। अल-गौना की खूबसूरती खींच रही है। लाल सागर के रिसॉर्ट, एयरपोर्ट से तीस मिनट की दूरी पर है और यहां के रेतीले समुद्र तट पर ताड़ के पेड़ों से घिरे अजीब रेस्तरां ध्यान खींचते हैं। अल-गौना, फिल्म फेस्टिवल के लिए आदर्श जगह लगती है।

अल-गौना का यह पहला साल है और शुरुआत से ही भारत ने रिश्ता जोड़ लिया है। यहां अनुराग कश्यप और इरफान खान भी दिख सकते हैं। अनुराग यहां **'मुक्काबाज'** की स्क्रीनिंग कर सकते हैं।

इजिप्ट से गौतमन भास्करन

मुक्केबाजी पर बनी इस फिल्म में शादी के बाद शिखर पर लौटे युवक और उसके प्यार की कहानी है, जिसमें भारत की जाति व्यवस्था, राजनीतिक भ्रष्टाचार का जिक्र है। यह कई बुराइयों की आलोचना करती फिल्म है। बॉलीवुड की मुख्य धारा से अलग है और ढाई घंटे की इस फिल्म की थीम कला और उससे जुड़े किरदारों के साथ-साथ आलोचना और सामाजिक कुरीतियों की मिली-जुली कहानी

लीक से हट कर है 'मुक्काबाज'

गढ़ते हुए नई शैली पेश करती है, जिसमें कॉमेडी, नाटक, कहानी सब कुछ गुंथा हुआ है। अल-गौना का दूसरा रिश्ता इरफान खान से जुड़ता है, उनकी फिल्म **'नो बेड ऑफ रोजेस'** के जरिये यहां नजर आएंगे, जिसकी कहानी कुछ यूं है कि नामचीन शख्स के घोटाले से बांग्लादेश की रूढ़िवादी सोसायटी हिल जाती है। नायक के परिवार में दरार और तलाक के बीच उस पर छपती खबरों से बचने की जद्दोजहद इस फिल्म को अलग बनाती है। फिल्म ये सवाल खड़े करती है कि पहले से मौजूद अकेलेपन और अस्तित्व के लिए खुशियों की तलाश की क्यों अहमियत नहीं है। क्या ये मानवीय परिस्थितियों के बीच अंत तक नहीं बनी रह सकतीं? फिल्म के डायरेक्टर मुस्तफा सरवर फारुकी ने इसे अलग ही आवाज दी है। भारत में यह फिल्म कुछ सेंसरशिप के साथ दिखाई जा सकती हैं।

लेखक एकी कौरिस्मकी की फिल्म **'द अदर साइड ऑफ होप'** में शरणार्थियों की कहानी है। इस विषय पर फिल्म मुश्किल है, क्योंकि इससे राजनेता परेशान हो जाते हैं। यह फिल्म दो लोगों की कहानी है। ट्रेवलिंग सेल्समैन विक्स्ट्रम फिनलैंड का व्यापारी है और अकसर अपनी पत्नी से झगड़ता है। वह नौकरी छोड़ कर जुआ खेलने लगता है। जिंदगी को बदलने की कोशिश में वह पोकर खेल कर पैसा कमाता है और जुआघर खरीदता है, जहां सीरिया का शरणार्थी खालिद अपनी जगह बना लेता है, जो किराए पर जहाज से फिनलैंड जाने की फिराक में है। वह अपनी बहन की तलाश में है। उसकी मदद के लिए दो लोग साथ आते हैं। यही कहानी का मोड़ है। इस सब मेलजोल के बीच पसरी निराशा को निर्देशक कौरिस्मकी बड़ी खूबसूरती से पेश करते हैं और इससे बाहर आने की कोशिश फिल्म दिखाती है।

फ्रांसीसी नाटक **'आफ्टर द वार'**, कान में खेला गया था। इसकी शुरुआत में पूर्व इतालवी आतंकवादी की कहानी है, जिसका फ्रांस में सुरक्षित ठिकाना छिन गया है। वह अपनी स्कूल जाने वाली बेटी को लेकर यूरोप भागना चाहता है। राजनीतिक प्रतिशोध और हिंसा पर इस फिल्म की टेढ़ी नजर है कि कैसे ये आदमियों की जिंदगी पर असर डालती है। 2002 में फ्रांस ने इटली से सजा पाए आतंकियों को प्रत्यर्पण के चलते फ्रांस में रहने की अनुमति देने की पॉलिसी हटा दी थी। उसी साल कानून के जानकार मार्को बिगी की हत्या हो गई थी। मार्को लंबार्टी की काल्पनिक कहानी बनने के लिए इन दो घटनाओं को ही चुना है, जो एक क्रांति के लिए हथियार उठाते हैं और एक न्यायाधीश की हत्या के बाद 1981 में इटली से फ्रांस भाग जाते हैं। ●